International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

एकरसवाद

अपर्णा
शोधच्छात्रा
संस्कृत एवं प्राकृत भाषा विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ।

नाट्यशास्त्र का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्त्व रस है। रस के आदि प्रणेता भरतमुनि माने जाते हैं। उनकी दृष्टि में रस नाट्य रचना के लिए इतना महत्त्वपूर्ण है कि उसके बिना कोई काव्यार्थ प्रवृत्त नहीं होता है–

न हि रसादृते कश्चिदर्थ प्रवर्त्तते।[1]

रस–निष्पत्ति के सम्बन्ध में भरत का निम्नलिखित सूत्र अत्यन्त प्रसिद्ध है–

विभानुभावव्याभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः।[2]

विभाव, अनुभाव और व्याभिचारी भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। अभिनव गुप्त के अनुसार गीत ध्वनि से भी रस की अभिव्यक्ति होती है–

गीतादिशब्देभ्योऽपि रसाभिव्यक्तिरस्ति।[3]

भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में रसों की संख्या 8 बताई है। 8 रस इस प्रकार है–

शृङ्गारहास्यकरुणरौद्रवीरभयानकाः।

वीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः।[4]

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

अभिनव गुप्त शान्त नामक नवाँ रस भी मानते हैं। अभिनवगुप्त ने रस क्रम का सुन्दर विवेचन किया है। अग्निपुराण में भी नौ रस स्वीकार किए गए हैं। पण्डितराजजगन्नाथ ने भी नौ रस माने हैं। उनका कथन है– रसानां नवत्वगणना च मुनिवचननियन्त्रिता भज्यते इति यथाशास्त्रमेव ज्यायः।[5]

भारतीय नाट्यशास्त्रीय परम्परा में जहाँ एक ओर अनेकों रसों की मान्यता है, वहीं दूसरी ओर एक ही मूल रस मानने की परम्परा भी विद्यमान है इस परम्परा को मानने वाले आचार्य एक ही मूल रस को स्वीकार करते थे तथा उसी से अन्य रसों की उत्पत्ति एवं विकास मानते हुए अन्य रसों का उस एक ही मूल रस में समाहार कर लेते थे।

शृङ्गार रस–

अग्निपुराणकार का कथन है कि वास्तव में रस एक होता है और वह अखण्ड, चैतन्य और अनिर्वचनीय होता है। चैतन्य ही रस है और भावों के आधार पर विभिन्न रूपों में अवभासित होता है। उस चैतन्य का प्रथम अनुभाव अहंकार या अनुभाव है। इसी अहंकार का दूसरा नाम शृङ्गार है, यही मूल रस है। अग्निपुराणोक्त शृङ्गार स्त्री–पुरुष का वासनात्मक प्रेम नहीं है, यह आत्मनिष्ठ निरपेक्ष प्रेम है। इसी शृङगार से अन्य रसों की उत्पत्ति एवं अभिव्यक्ति मानी गई है। अग्निपुराणानुसार जहाँ शृङ्गार है वहीं रस है। शृङ्गार के बिना सब रस–विहीन है–

शृङ्गारी चेत्कविः काव्ये जातं रसमयं जगत्।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

स एव चेदशृङ्गारी नीरसं सर्वमेव तत्।।[6]

भोज ने भी अग्निपुराण के अनुसार शृङ्गार ही एकमात्र मूल रस माना है। **शृङ्गारमेव रसनाद्रसमामनामः।**[7] भोज ने शृङ्गार को रसराज कहा है। भोज के अनुसार आत्मप्रतीति का नाम अहङ्कार है और अहङ्कार आत्मा का विशेषगुण है, वही अभिमान है, वही शृङ्गार है और शृङ्गार ही रस है।

रसोऽभिमानोऽहङ्कारः शृङ्गार इति गीयते।[8]

शान्तरस–

अभिनवगुप्त ने शान्त को ही मूलभूत रस माना है। अभिनवगुप्त के अनुसार शानत रस प्रकृति है और अन्य सभी रस विकृति है। उनके अनुसार शृङ्गारादि विकृत रस अपने–अपने विशिष्ट हेतुओं को प्राप्त कर उसी प्रकृति शान्त रस में उद्भूत हुआ करते हैं और उसी में विलीन हो जाते हैं।

''स्वं–स्वं निमित्तमासाद्य शान्तद्भावः प्रवर्त्तते।

पुनर्निमित्तापाये च शान्त एवोपलीयते।।[9]

शान्त रस का स्थायी भाव 'शम' है। मम्मट के अनुसार शान्तरस का स्थायी भाव निर्वेद है। **निर्वेदस्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रसः।**[10]

अद्भुत रस–

अभिनवगुप्त के अनुसार चमत्कारैकप्राण आनन्दरूप अखण्ड की अनुभूति ही आस्वाद है और यह आस्वाद ही अलौकिक चमत्कार है और चमत्कार (अद्भुत) ही रस है और रस ही चमत्कार है।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

अलौकिकचमत्कारत्मा रसास्वादः स्मृत्यनुमानलौकिकस्वसंवेदन–विलक्षण एव।[11]

साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ ने अपने पूर्वज नारायण पण्डित के केवल अद्भुत रस को ही मूल रस मानने का उल्लेख करते हुए लिखा है–

रसे सारश्चमत्कारः सर्वत्राप्यनुभूयते।

तच्चमत्कारसारत्वात् सर्वत्राप्यद्भुतो रसः।।

तस्माददद्भुतमेवाह कृती नारायणो रसम्।।[12]

पण्डितराज जगन्नाथ ने चमत्कार को लोकोत्तरत्त्व का पर्याय माना है। इस चमत्कार में ही रमणीयता रहती है।

करुण रस–

भवभूति ने करुण को ही एक मात्र मूल रस माना है और अन्य रसों को उसका विवर्त कहा है। उनके अनुसार एक करुण रस ही कारण भेद से भिन्न होकर पृथक–पृथक श्रृङ्गारादि परिणामों को प्राप्त करता हुआ प्रतीत होता है, जैसे जल ही भँवर, बुलबुला, तरंग आदि विकारों को प्राप्त होता है। वस्तुतः वह सब जल ही है–

एको रसः करुण एवं निमित्तभेदाद्

भिन्नः पृथक्पृथगिवश्रयते विवर्तान्।

आवर्तबुद्बुदतरङ्गमयान्विकारा

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

नम्भो यथा सलिलमेव हि तत्समस्तम्।।[13]

उत्तररामचरितम् के टीकाकार वीरराघव और घनश्याम ने भी स्पष्ट रूप से यह स्वीकार किया है कि भवभूति का अभिमत है कि करुण ही एक रस है, वह प्रकृति रूप है, अन्य रस उसकी विकृति है। करुण रस ही अन्य रसों में परिणत होता है।

इदमत्र कवेर्मतम्– यद्यपि शृङ्गार एक एव रस इतिशृङ्गारप्रकाशकारादिमतम्, तथापि प्राचुर्याद् रागिविरागिसाधारण्यात् करुण एक एवं रसः। अन्ये तु तद्विकृतयः (वीरराघव) शृङ्गारादिरसोपाधिभिर्भिन्न इव दृश्यमानोऽपि करुणो रसः अन्यतस्तदभिन्नः सन् एक एवेति भावः। (घनश्याम)[14]

आचार्य आनन्दवर्धन ने क्रौञ्च सहचरीवियोगोत्थ शोक (करुण) को ही काव्य की आत्मा कहा है–

काव्यस्यात्मा स एवार्थस्तथा चादिकवेः पुरा।

क्रौञ्चद्वन्द्ववियोगात्थः शोकः श्लोकत्वमागत।।[15]

क्रौञ्च पक्षी की घटना को देखकर महर्षि वाल्मीकि के हृदय में विद्यमानशोक ही करुण रस के रूप में प्रस्फुरित हो गया। वही शोक (करुण) काव्य की आत्मा है। वही निमित्तों के भेदों के आधार पर विभिन्न रसों के रूप में परिणत होता है। करुण ही एकमात्र रस है, अन्य सभी रस उसके विवर्त्त या विकार हैं।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

भक्तिरस–

रूपगोस्वामी ने अपने 'भक्तिरसामृतसिन्धु' तथा 'उज्ज्वलनीलमणि' नामक ग्रन्थों में भक्ति रस का प्रतिपादन ही नहीं किया अपितु उसे एक मात्र मूल रस माना है और अन्य रसों को उसका विकार या विकृति माना है। वे देवताविषयक रति को तो साहित्य शास्त्रियों के समान 'भाव' ही कहते हैं, किन्तु भक्तिरस का स्थायिभाव केवल श्रीकृष्ण विषयक रति को मानते है।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

सन्दर्भ

1. नाट्यशास्त्र, भाग 1 पृ0 272
2. नाट्यशास्त्र (गायकवाड़), भाग 1, पृ0 272
3. ध्वन्योलोकवृत्ति 3, 33
4. नाट्यशास्त्र अध्याय–6
5. रसगङ्गाधर, पृ0 176
6. अग्निपुराणोक्तकाव्यालङ्कारशास्त्र 4/27
7. शृंगारप्रकाश 1/6–7
8. सरस्वतीकाण्ठभरण 5/1
9. अभिनवभारती अध्याय–6
10. काव्यप्रकाश 4/47
11. अभिनवभारती अध्याय–6
12. काव्यप्रकाश, सम्पादक– डॉ0 नरेन्द्र– ज्ञान मण्डल लिमिटेड– पृ0 120
13. उत्तररामचरितम् 3/47
14. उत्तररामचरितम्–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, भूमिका भाग, पृ0 87
15. नाट्यशास्त्र का इतिहास– डॉ0 पारसनाथ द्विवेदी, पृ0 377